राजीव खंडेलवाल
(लेखक वरिष्ठ कर सलाहकार एवं पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

न्याय व विवेक की परीक्षा?- पूरा प्रकरण भारतीय न्यायिक व्यवस्था, पुलिस प्रशासन और मानवीय विवेक — तीनों पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है. क्या अब किसी व्यक्ति की ईमानदारी, भ्रष्टाचार या अपराध सिद्ध करने के लिए ''आत्महत्या मापदंड होकर एक नया साधन साध्य के लिए हो गया है? यह आवश्यक है कि उक्त दोनों परस्पर गुथे हुए प्रकरणों की निष्पक्ष, न्यायोचित और स्वतंत्र एजेंसी से उच्च न्यायालय के की निगरानी में जांच हो — ताकि दूध का दूध, पानी का पानी होकर स्पष्ट हो सके कि यह ''मानसिक तनाव की परिणति थी या ''सुनियोजित षड्यंत्र. सच्चाई जो भी हो, उसे उजागर करना देश की न्याय-व्यवस्था, प्रशासनिक मर्यादा और जन-विश्वास— तीनों के लिए अनिवार्य है.

देश की कानूनी व्यवस्था का मज़ाक?

हरियाणा में पुलिस विभाग के दो अधिकारियों- आईपीएस अधिकारी आईजी वाई. पूरण कुमार और एक सप्ताह बाद सहायक सब-इंस्पेक्टर संदीप कुमार लाठर- की आत्महत्याओं ने अनेक अनुत्तरित प्रश्नों को जन्म दिया है. संभवतः देश के इतिहास में पहला ऐसा मामला है, जहाँ एक वरिष्ठ और एक बहुत ही कनिष्ठ अधीनस्थ अधिकारी — दोनों ने परस्पर विपरीत उद्देश्यों के चलते आत्महत्या का मार्ग चुनकर एक दूसरे को बदनाम करने का प्रयास किया.. यह सिर्फ प्रशासनिक नहीं, बल्कि गहराई से मानवीय, सामाजिक और संवेदनशील विषय है. इसलिए विश्लेषण से पहले दोनों मृतात्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना उचित होगा. एक सप्ताह के अंतराल में हुई इन दो आत्महत्याओं ने आमजन की बुद्धि और विवेक पर जैसे ताला जड़ दिया है. जब तक गहन जांच से सच्चाई सामने नहीं आती, तब तक यह मामला रहस्य और संशय के घेरे में रहेगा.

क्या यह वास्तव में आत्महत्या है- या किसी षड्यंत्र की पटकथा?- यह कहना आसान नहीं कि दोनों ने अपनी मर्ज़ी से जान दी—या किसी सुनियोजित सिस्टम (तंत्र) का हिस्सा बने. दोनों प्रकरणों में जो सुसाइड नोट और एक वीडियो बयान सामने आए हैं, वे कई विरोधाभास और आशंकाएँ पैदा करते हैं. एक वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी— जिनकी पत्नी भी वरिष्ठ आईएएस हैं, और जिनके साले अमित रतन राफता, बठिंडा विधानसभा से आप पार्टी के पंजाब में विधायक हैं— वे केवल इसलिए आत्महत्या कर लें कि उनके अधीनस्थ अधिकारी ने भ्रष्टाचार के आरोप लगाए? यह कुछ हजम होने वाला कथानक नहीं लगता. प्रधानमंत्री के नारे न खाऊँगा, न खाने दूँगा के बावजूद भ्रष्टाचार अब शिष्टाचार बन चुका है— यह वाक्य आज के प्रशासनिक परिदृश्य की कटु सच्चाई को उजागर करता है. अभी पंजाब में डीआईजी हरचरण सिंह भुल्लर से 7 करोड़ से अधिक नकदी की बरामदी क्या संकेत करती है?

भ्रष्टाचार, जातीय भेदभाव या आंतरिक साज़िश?- अब तक जो तथ्य मीडिया में आए हैं, वे संकेत देते हैं कि यह मामला जातिगत भेदभाव, भ्रष्टाचार, मानसिक उत्पीड़न, पुलिस-गैंगस्टर नेक्सस और आंतरिक साजिशों से गहराई से जुड़ा हुआ है. पूरण कुमार के पीएसओ (पर्सनल सिक्योरिटी ऑफिसर) सुशील कुमार के खिलाफ चल रही जांच में सहायक सब-इंस्पेक्टर संदीप लाठर भी शामिल थे. आरोप है कि पीएसओ को बिना वारंट या प्राथमिकी के पाँच दिन तक अवैध हिरासत में रखा गया और उस पर दबाव डालकर आईजी पूरण कुमार के खिलाफ बयान दिलाया गया.

राजनीति व जातीय राजनीति हावी- घटना का घटित होना और उस पर राजनीति हावी हो जाना, यह देश का चरित्र बन चुका है. राहुल गांधी का एडीजीपी के घर शोक व्यक्त करने जाना और एएसआई के घर न जाना शुद्ध राजनीति नहीं तो क्या है? क्योंकि पूरण कुमार दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं तो लाठर जाट वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं. बिहार में हो रहे आम चुनाव में दलित वर्ग का महत्व ज्यादा है, न की जाट वर्ग का.

आत्महत्या के बाद आरोपों का सिलसिला क्यों?- यह प्रश्न अब और भी गहरा हो गया है कि जो व्यक्ति जीवित नहीं है, उस पर मृत्यु के बाद भ्रष्टाचार के आरोप लगाकर आत्महत्या कर लेना अथवा क्या किसी नियोजित पटकथा सुनियोजित षड्यंत्र? का हिस्सा तो नहीं? जांच का विषय? कानूनी रूप से यह सर्वविदित है कि मृत्यु के बाद कोई आपराधिक कार्रवाई संभव नहीं. बदला लेने का प्रचलित हथियार हत्या के बदले कहीं आत्महत्या तो नहीं होते जा रहा है? ताकि घृणा की बजाय सहानुभूति मिल सके व तथाकथित और उद्देश्यों की पूर्ति भी हो जाए?

शव का उपयोग! एक हथियार के रूप में?- असंवेदनशीलता की इंतिहा यहां तक हो गई कि पूरण कुमार की मृत्यु के 8 दिन बाद तक पोस्टमार्टम नहीं होने दिया गया! मृतक पूरण कुमार की धर्मपत्नी ने ही एक टूल के रूप में उपयोग किया. क्या लड़ाई के अन्य कोई साधन उपलब्ध नहीं रह गए थे? जीवित रहते हुए परस्पर आरोप-प्रत्यारोप लड़ाई सामान्य सी बात हैं, लेकिन मृत्यु के बाद शव का भी किसी दिशा-विशेष में उपयोग किया जाना — व्यवस्था पर गहरा प्रश्न चिन्ह है.

विशेष जांच दल (एसआइटी) की जांच बैमानी तो नहीं?-जब प्रार्थी/आरोपी पुलिस विभाग से संबंधित उच्च पदों पर हो, तब एसआईटी जांच कितनी प्रभावशाली व निष्पक्ष हो सकती है? शायद इसीलिए उच्च न्यायालय में सीबीआई जांच की मांग के लिए पीएलआइ दायर की गई है, जिसमें अभी सरकार को नोटिस जारी नहीं हुआ है.

मृत्युपूर्व बयान की स्थापित अवधारणा पर चोट तो नहीं?- मरता हुआ व्यक्ति झूठ नहीं बोलता है, इसी अवधारणा के आधार पर भारतीय न्याय व्यवस्था में भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 32 के अंतर्गत मात्र डाईंग डिक्लेरेशन,के आधार पर भी सजा दी जा सकती है, यदि वह प्रामाणिक और विश्वसनीय है तो? जिंदगी अमूल्य है. जिंदगी की आहुति देकर कोई आरोप लगाता है, तो उसे प्रथम दृष्टया नकारा नहीं जा सकता है.

अंतत: प्रकरण से उत्पन्न सुलगते यक्ष प्रश्न?

1. क्या एक एडीजीपी रैंक के वरिष्ठ अधिकारी, जिनकी पत्नी आईएएस हैं और परिवार राजनैतिक रूप से प्रभावशाली है, जातीय उत्पीड़न का शिकार हो सकते हैं — जैसा कि आरोप लगाया?
2. क्या उन्हें भ्रष्टाचार के झूठे आरोपों में फँसाने की कोशिश की गई?
3. क्या उनके अधीनस्थ एसपी और सहायक सब-इंस्पेक्टर, (साइबर सेल) इतनी ऊँची रैंक (एडीजीपी) के अधिकारी के खिलाफ साजिश करने में सक्षम व प्रभावी थे?
4. पूरण कुमार की मृत्यु के बाद उन्हीं के अधीनस्थ कानून के रखवाले, कहे जाने वाले द्वारा पूरण कुमार के खिलाफ भ्रष्टाचार व यौन शोषण के आरोप लगाना — क्या कानून और नैतिकता के विरुद्ध नहीं है? क्योंकि मृतक के विरुद्ध तो कोई कानूनी कार्रवाई हो ही नहीं सकती है द्य
5. पूरण कुमार ने अपनी सुसाइड नोट में जिन अधिकारियों को आरोपित किया गया था, एक निचली श्रेणी के अधीनस्थ द्वारा ''ईमानदार 'प्रमाणित करना — क्या यह कोई दबाव, भय या किसी और ''निर्देशन'' या पूर्व-नियोजित योजना का परिणाम है?— अथवा यह संयोग है?

शुभ धनतेरस
आरोग्य से समृद्धि की ओर

श्री प्रतापराव जाधव

दिवाली के त्यौहार के आरंभ के प्रतीक धनतेरस के इस शुभ दिन को हम पारंपरिक रूप से समृद्धि, नवीनीकरण और नई शुरुआत के दिन के रूप में मनाते हैं. हमारे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, यह दिन समुद्र मंथन यानि ब्रह्मांडीय महासागर के महान मंथन के दौरान देवी लक्ष्मी और देवताओं के वैद्य धन्वंतरि के दिव्य अवतरण का स्मरण कराता है. यह पवित्र दिन केवल भौतिक समृद्धि का ही नहीं, बल्कि इस गहरे सच का भी प्रतीक है कि वास्तविक संपन्नता संपूर्ण कल्याण से ही आती है. संक्षेप में कहें तो, धनतेरस का त्यौहार हमें याद दिलाता है कि स्वास्थ्य ही सबसे श्रेष्ठ और सबसे चिरस्थायी धन है.

आयुर्वेद के अथाह ज्ञान के अनुसार, धनतेरस का महत्व त्यौहार से कहीं बढ़कर है. यह मौसम में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ जब हेमंत ऋतु, यानी शीत ऋतु का आरंभ हो रहा होता है उस समय आता है. हमारे प्राचीन ऋषियों के अनुसार इस अवधि को कायाकल्प, विषहरण और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अत्यंत अनुकूल माना जाता है. इस शुभ दिन से जुड़े पारंपरिक अनुष्ठान, जैसे कि मिट्टी के दीये जलाना और सोने-चांदी के बर्तनों की औपचारिक खरीद, स्वास्थ्य संरक्षण के प्रतीकात्मक और शारीरिक दोनों आयामों को दर्शाते हैं. दीये की प्रज्वलित लौ चेतना के प्रकाश और अज्ञानता के निवारण का प्रतीक है, वहीं अपने उपचार गुणों और शरीर की ऊर्जा को संतुलित करने की उल्लेखनीय क्षमता के कारण सोना और चांदी जैसी कीमती धातुएं आयुर्वेदिक चिकित्सा में हजारों सालों से महत्वपूर्ण मानी जाती रही हैं.

यह पवित्र दिन अंतरावलोकन, कृतज्ञता और सचेत देखभाल को भी प्रोत्साहित करता है. आयुर्वेद हमें सिखाता है कि तीन मूलभूत जैव-ऊर्जाओं— वात, पित्त और कफ जिन्हें सामूहिक रूप से त्रिदोष कहा जाता है उनका सामंजस्यपूर्ण संतुलन कितना आवश्यक है. इनका संतुलन हमारे जीवन में उत्साह, हमें मजबूत बनाने और हमारी दीर्घायु को सुनिश्चित करता है. जब ये तात्विक शक्तियाँ हमारे शरीर में संतुलन में रहती हैं, तो वे ओजस को जन्म देती हैं, यह तीव्र शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता और आध्यात्मिक तेज का सूक्ष्म सार है. यह ओजस स्थायी समृद्धि का सच्चा आधार है, जो केवल भौतिक समृद्धि या लौकिक सफलता से कहीं आगे तक फैला हुआ है.

आयुर्वेद की धन-संपत्ति की अवधारणा अत्यंत समग्र और बहुआयामी है. यह हमें सरल किन्तु परिवर्तनकारी अभ्यासों के माध्यम से अपने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण में सचेत निवेश करने का निमंत्रण देती हैं. इनमें पौष्टिक मौसमी खाद्य पदार्थों से अपने शरीर का पोषण करना, ध्यान और प्राणायाम के माध्यम से मन की शांति बनाये रखना, पर्याप्त और आरामदायक नींद सुनिश्चित करना, सौहार्दपूर्ण संबंध बनाना और कृतज्ञता एवं संतोष की भावना को बढ़ावा देना शामिल है.

ये केवल औपचारिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि चिर-सम्मानित स्वास्थ्य नुस्खे हैं जो हमारी सहनशक्ति को मजबूत करते हैं, हमारी प्रतिरक्षात्मकता को बढ़ाते हैं, तथा हमारे जीवन में स्थिरता और शांति लाते हैं. धनतेरस के समय होने वाले मौसमी परिवर्तन के दौरान, आयुर्वेदिक पद्धतियों जैसे अभ्यंग (तेल मालिश), घी और गर्म मसालों का सेवन, योग का अभ्यास, तथा पाचन और मौसमी आहार को अपनाने का एक उपयुक्त अवसर होता है. हजारों वर्षों के अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित ये निवारक उपाय हमें मजबूत और स्वस्थ बनाने और बीमारियों को आने से पहले ही रोकने में मदद करते हैं.

आज के आधुनिक समय में, जहाँ जीवनशैली संबंधी विकार महामारी के रूप में फैल रहे हैं और तनाव से जुड़ी बीमारियाँ लाखों लोगों को प्रभावित कर रही हैं, आयुर्वेद का प्राचीन ज्ञान व्यावहारिक, सुलभ और प्रभावी समाधान प्रदान करता है. आयुष मंत्रालय इन पारंपरिक स्वास्थ्य विज्ञान को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा में एकीकृत करने के लिए अथक प्रयास कर रहा है, जिससे हर भारतीय परिवार स्वस्थ हो सके और साथ ही इस अमूल्य ज्ञान को दुनिया के साथ भी साझा किया जा सके.

(लेखक-केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री हैं)

यह धनतेरस हमारे देश के हर घर में न केवल भौतिक सम्पति बल्कि दीर्घकालिक, सौष्ठव, प्राकृतिक संतुलन, मानसिक शांति और सच्चा आनंद लेकर आए. आइए हम एक ऐसा त्योहार मनाएँ जो वास्तव में शरीर का पोषण करे, मन को ऊर्जावान बनाए और आत्मा का उत्थान करें, जिससे स्वास्थ्य और संपूर्णता की एक अमूल्य विरासत का निर्माण हो सके जो आने वाली पीढ़ियों तक गूंजती रहेगी.

शुभ धनतेरस!

व्यंग्य
उल्लुओं का सत्याग्रह

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

यह मान्यता है कि प्रत्येक देवी देवताओं द्वारा वाहन या कहिए की सवारी के रूप में अपने अपने पशु और पक्षी हैं. जैसे मां दुर्गा की सवारी सिंह है, तो विद्या की देवी सरस्वती का वाहन हंस है. इसी तरह धन की देवी लक्ष्मी का वाहन उल्लू को माना जाता है. देवाधिदेव महादेव का वाहन नंदी है. गणपति महाराज का वाहन मूषक है. लक्ष्मी माता कमल के आसान पर विराजमान होतीं हैं. अब बात मां लक्ष्मी की सवारी की तो एक बार की बात है कि उल्लुओं में भी इस बात को लेकर असंतोष फैल गया कि संसार में उनकी घोर उपेक्षा हो रही है.

उनका मानना था कि वे माता लक्ष्मी को अपनी पीठ पर बैठा कर पूरे संसार में भ्रमण कराते हैं ताकि कहीं भी धन की कमी न हो. सब माता लक्ष्मी को ही पूजते और पूछते हैं पर यह दुर्भाग्य और हमारे साथ अन्याय है कि हमारी कोई इज्जत ही नहीं है. हम से अच्छे तो पृथ्वी पर मंत्रियों और अफसरों के वाहन चालक हैं जिनकी पूछ परख तो होती ही है, साथ ही साथ उनकी चाय -पानी का भी ध्यान रखा जाता है. वो तो डीज़ल पेट्रोल के भी मालिक हैं. हमारे पास तो कुछु भी नहीं हैं. न तनख़ा न ड्रेस और ना ही कोई टिप विप. यह पृथ्वी पर व्याप्त लोकतंत्र का असर कहिए या कलयुग का प्रभाव.

उल्लुओं ने इस विषय पर एक बड़ी सभा आयोजित करने का निश्चय किया ताकि वे अपनी भावनाओं से लक्ष्मी माता को शांति पूर्ण ढंग से अवगत करा सकें. उल्लुओं ने इसके लिए बड़ी बुद्धिमानी और समझदारी से काम लेते हुए मानसून अर्थात चौमासा का समय इसलिए चुना क्योंकि इस कलावधि में मानसून के समय सभी देवी - देवता स्वर्ग में विश्राम करते हैं. इसलिए पृथ्वी पर एक बड़े समाज में विवाह कार्य समेत अन्य मंगल कार्य बंद रहते हैं. लक्ष्मी - नारायण समेत समस्त देवी और देवता अवकाश पर रहते हैं . ऐसे में वे उनकी कोई भी प्रार्थना आराम से सुन सकते हैं .तो सभी उल्लुओं ने मनुष्यों की ही तरह लोकतांत्रिक अस्त्र का उपयोग करते हुए देश भर के सभी उल्लुओं को विशेष बैठक के लिए आमंत्रित किया.

आपको बता दें कि जिस तरह से देवी देवता गण अवकाश काल के दौरान स्वर्ग में विश्राम करते हैं, ठीक उसी प्रकार पृथ्वीलोक पर भी न्यायाधीश महीनों- महीनों तक सावैतनिक अवकाश पर रह कर अपना आराम फरमाते रहते हैं. न्यायाधीश भी एक तरह से पृथ्वीलोक के भगवान ही हैं. उनका फैसला फायनल होता है. वे यदि चाहें तो किसी मामले की सुनवाई के लिए रात को दो बजे भी अदालत लगा लें और न चाहें तो फरियादी को अगले जन्म तक इंतजार करवा दें. वे आदमी तो आदमी पशुओं को भी सजा सुना सकते हैं. उनके समक्ष आदमी और पशुओं में कोई अंतर नहीं होता. वे सम दर्शी हैं. यह अत्यंत ही संतोष की बात है की हमारे जज साहेबान पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं. उन्हें विश्वास है कि अगले जन्म में वे फिर से जज की ही योनि में जन्म लेंगे. रही बात मुकदमों में विलम्ब से फैसलों की तो बेचारे न्यायमूर्ति तो वादी के हित की ही सोचते हैं. क्योंकि जब तक जज साहब फैसला नहीं सुनाएंगे तब तक वादी मरना तो दूर मरने की सोच ही नहीं सकता. फरियादी की उमर से ज्यादा लंबे टेम तक सांस चलने देने में जज साहब की बड़ी भूमिका होती है .

अपने मुकद्दमे की फैसले की आस में वह खुदा द्वारा बख़्शी गई उम्र से भी ज्यादा जिए ही चला जाता है,जिए ही चला जाता है. इस आस में कि उस पर भी योर ऑनर को रहम आएगा. इस बीच वह यमराज जी से बार बार रिक्वेस्ट करता है, हुजूर मुकदमा निबट जाए तब चलते हैं. उसे काले भैंसे पर सवार यमराज सर में भगवान नजर आते हैं. वे कम से कम उस पर रहम तो कर देते हैं और एक डायस पर बैठे स्वयं भू भगवान हैं जो बिल्कुल ही नहीं पसीजते हैं. वह सोचता है काश ये भी 卐मूर्ति卐 की जगह इंसान होते तो मैं भी टेम से यमराज जी के साथ निकल लेता. वहां लेट होने की न जाने क्या सजा मिले ?

उल्लुओं ने तय किया कि अवकाश काल के दौरान देवी देवता रिलेक्स मूड में होते हैं ऐसे में वे कोई भी प्रार्थना आराम से सुन सकते हैं. तो सभी उल्लुओं ने मनुष्यों की ही तरह अपने लोकतांत्रिक अस्त्र का उपयोग करते हुए देश भर के सभी उल्लुओं को बैठक के लिए आमंत्रित किया. उस बैठक में कूटनीति से काम लेते हुए तय किया गया कि माता लक्ष्मी से मिलने के पहले क्यों ने भगवान नारायण के वाहन खगराज गरुड़ से भेंट कर उनका आशीर्वाद और सहयोग मांगा जाए.

उल्लुओं ने तय किया कि पांच उल्लू जा कर खगराज गरुड़ से अपनी समस्याओं के बारे में निवेदन करेंगे. सो उन से मुलाकात की गई. उन्हें समस्या बताई गईं .गरुड़ महाराज ने आश्वासन दिया कि वे प्रभु नारायण से और माता लक्ष्मी से इस विषय पर आग्रह करेंगे. उन्होंने उल्लुओं से कहा कि वे स्वयं भी माता लक्ष्मी से निवेदन करें.

खगराज गरुड़ के परामर्श से उल्लू गण माता लक्ष्मी से मिले और उन्हें अपनी समस्या अवगत कराया. माता लक्ष्मी ने उनको ध्यान से सुना और उन्हें रुकने का इशारा कर वे नारायण भगवान से विमर्श करने अंदर कक्ष में चलीं गईं. कुछ समय के बाद जब वह वापस आईं तो बोलीं उल्लू गणों हमने आप की समस्या पर श्री नारायण से विमर्श के बाद निर्णय लिया है कि आपकी समस्या का समाधान होना ही चाहिए. उसका समाधान उचित है.

अब से हमने निर्णय लिया है कि पृथ्वी लोक आपको भी उचित सम्मान मिलेगा. अब राजनीति हो या प्रशासकीय क्षेत्र या आर्थिक या शैक्षणिक क्षेत्र ही क्यों न हो हर क्षेत्र में मानव भेष में उल्लू रहेंगे. हर धनपति में तुम्हारी ही आत्मा होगी. हमरा वाहन होने के नाते हम तुम्हें वरदान देते हैं कि जहां भी मैं अर्थात लक्ष्मी रहेगी उस व्यक्ति के अंदर तुम अदृश्य रूप में रहोगे. उसका सम्मान वास्तव में तुम्हारे उल्लूत्व का सम्मान होगा. पृथ्वी लोक में तुम हर धनपति के अंतर मन और बुद्धि में मौजूद रहोगे. उसका जो सम्मान होगा वह वास्तव में तुम्हारा सम्मान होगा. इसी वरदान का असर है कि कहा जाता है कि हर शाख पर उल्लू बैठा है अंजाम ए गुलिस्तां क्या होगा. इसका असर हम आज संसद से सड़क तक महसूस कर रहे हैं. उल्लुओं को इतना सम्मान मिल रहा है कि आदमी एक दूसरे को और यहां तक कि खुद को भी उल्लू बना रहा है.

यादव, खंडेलवाल और हितानंद की तिकड़ी से क्या बदलेगी भाजपा

दिनेश गुप्ता

भारतीय जनता पार्टी भी अब कांग्रेस की तरह गुटबाजी का शिकार दिख रही है. यद्यपि भाजपा के नेताओं में निपटने- और निपटाने का वह भाव दिखाई नहीं दे रहा जो चुनाव के वक्त कांग्रेस के नेताओं में सामने आता है. भाजपा के भीतर नेताओं को घर बैठाने और उसके आभा मंडल को क्षीण करने के तरीके अलग हैं. शिवराज सिंह चौहान के लिए उमा भारती और बाबूलाल गौर को कैसे किनारे लगाया गया सामने है. प्रदेश में अब मोहन युग की शुरुआत हुई है. अब तिकड़ी (मुख्यमंत्री डाक्टर मोहन यादव, हेमंत खंडेलवाल और हितानंद शर्मा) नया अध्याय लिखने की तैयारी कर रही है. इन दिनों मुख्यमंत्री सबसे ज्यादा केंद्रीय मंत्री ज्यतिरादित्य सिंधिया के पास आते-जाते दिख रहे हैं. शिवपुरी में अतिवृष्टि से मची तबाही को देखने दोनों नेता साथ गए थे लेकिन, शिवपुरी में नगर पालिका अध्यक्ष गायत्री शर्मा को हटाने के लिए पार्षदों के सड़क पर तक उतर जाने के बाद भी किसी ने भी ध्यान नहीं दिया. संगठन ने भी शिवपुरी के घटनाक्रम को पूरी तरह नजरांदाज किया. गायत्री शर्मा को ज्योतिरादित्य सिंधिया का वरद हस्त मिला हुआ है ग्वालियर संभाग में हितानंद शर्मा की दिलचस्पी भी छुपी हुई नहीं है.

शिवराज सिंह चौहान को भोपाल से विस्थापित कर दिल्ली में पुनर्वास किया गया है. चौहान का नाम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए चर्चा में बना रहता है. हो सकता है भविष्य में उनके नाम की चर्चा प्रधानमंत्री पर के लिए पद के लिए भी होने लगे? प्रधानमंत्री का पद कब खाली होगा कोई नहीं जानता. राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद भी कार्यकाल पूरा होने के बाद भी खाली नहीं हो पा रहा है! जेपी नड्डा नए अध्यक्ष के इंतजार में पद पर रहने का नया रिकॉर्ड कायम करने की ओर है! इसे भारतीय जनता पार्टी की आंतरिक गुटबाजी के नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए. यह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के युग की भाजपा है. अटल बिहारी वाजपेई और लालकृष्ण आडवाणी युग की भाजपा अलग तरह की भाजपा थी. उस भाजपा में वैचारिक और सैद्धांतिक मतभेदों के लिए भी पर्याप्त जगह थी. अब मतभेद की कोई गुंजाइश पार्टी के भीतर नहीं है. होना भी वही है जो मोटी-शाह तय करेंगे. राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए जो नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सुझाए होंगे संभवत उन पर दो शीर्ष नेताओं की सहमति नहीं होगी. इस कारण मामला लंबा खीचता जा रहा है. पार्टी के भीतर के विरोध शब्द कोई आवाज भी कहीं सुनाई नहीं देती. कोई विरोध करके अपना राजनीतिक भविष्य दांव पर नहीं लगाना चाहता. यही कारण है कि जब भी शिवराज सिंह चौहान के नाम की चर्चा होती है.

तब वे सफाई और बचाव की मुद्रा में सामने आकर अपने भविष्य को बचाने में लग जाते हैं. मध्य प्रदेश में जब डॉक्टर मोहन यादव के नाम की पर्ची निकली तो बड़ी आसानी से उनकी ताजपोशी हो गई है. मध्य प्रदेश भाजपा का इतिहास देखेंगे तो उसमें आसहमति के स्वर वाले कई पन्ने दिखाई देंगे. एक पन्ने पर शिवराज सिंह चौहान का नाम भी होगा.उन्होंने विक्रम वर्मा के विरोध स्वरूप प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव लड़ने में भी हिचक नहीं दिखाई थी. विक्रम वर्मा कुशाभाऊ ठाकरे की पसंद के उम्मीदवार थे. ठाकरे की पसंद को संगठन की या संघ की सहमति के तौर पर स्वीकार नहीं किया गया था. दूसरा वाकया शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री बनने के समय सामने आया था. उमा भारती और उनके समर्थक पूरी दमदारी के साथ विधायक दल की बैठक में विरोध करते रहे. चौहान को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई का समर्थन हासिल था. चौहान की ताजपोशी के लिए प्रमोद महाजन और अरुण जेटली जैसे नेताओं को भेजा गया था. उमा भारती खुद मुख्यमंत्री बनना चाहती थीं. वह किसी और नाम पर तैयार नहीं थी. भाजपा का राष्ट्रीय संगठन बाबूलाल गौर को हटाने की उनकी (उमा भारती) जिद को पूरा तो करना चाहता था लेकिन, उन्हें मुख्यमंत्री नहीं बनना चाहता था. उमा भारती किसी और नेता का नाम विधायक दल में रखनी तो भी शिवराज सिंह चौहान शायद मुख्यमंत्री न बन पाते. लेकिन, उमा भारती ने बगावत का रास्ता चुना. इससे उनके राजनीतिक कैरियर को वग्रहण लग गया. उमा भारती ने दो बार बगावती तेवर दिखाएं और दोनों ही बार पार्टी ने उन्हें माफ कर दिया.

शिवराज सिंह चौहान ने ?अब गए-तब गए? की अटकलें के बीच मुख्यमंत्री के पद पर एक नया रिकॉर्ड कायम किया. शिवराज सिंह चौहान का कार्यकाल इतना लंबा रहा कि उनके नाम के आगे आदतन मुख्यमंत्री लिखा जाने लगा. डॉ मोहन यादव खुद अभी तक इस सुखद अनुभूति से बाहर आते नहीं दिख रहे है कि वे राज्य के मुख्यमंत्री है. सरकार की दिशा क्या है और कहां जा रही है, अनुमान लगाना मुश्किल है. मुश्किल भरे इस दौर में हेमंत खंडेलवाल का पार्टी अध्यक्ष बनना डाक्टर मोहन यादव के पक्ष में देखा जा रहा है. दूसरी शब्दों में कहा जाए तो खंडेलवाल पर डाक्टर मोहन यादव का ठप्पा लगा दिया गया है. खंडेलवाल की पारिवारिक, राजनीतिक और आर्थिक विरासत काफी संपन्न है. इस मुश्किल दौर में जब पार्टी में हर तरफ असंतोष के स्वर सुनाई दे रहे हैं तब देवतुल्य कार्यकर्ता के मन में विश्वास पैदा करना चुनौती भरा होता है. मार्च 2020 के बाद से मध्यप्रदेश में समर्पित कार्यकर्ता ज्यादा उपेक्षित है. निरंतर कमजोर होती कांग्रेस के चलते पार्टी की जीत ने नेतृत्व में दंभ पैदा कर दिया है. भाजपा मुख्यालय में उम्मीद से आने वाले कार्यकर्ता इस दंभ के चलते अवसाद से भरे हुए हैं. खंडेलवाल को ऐसे कार्यकर्ता को यकीन दिलाना है कि सत्ता और संगठन उनके साथ अन्याय नहीं करेगा.

संगठन और सत्ता में नियुक्तियों के लिए खंडेलवाल ने जो तरीका अपनाया है वह निश्चित रूप से संजीवनी साबित हो सकता है, बशर्ते कि पर्यवेक्षकों ने उसमें प्रभावशाली लोगों का पक्ष न लिया हो? मऊगंज जिले की कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष बनाए गए राहुल गौतम ने पद लेना स्वीकार नहीं किया. पररवेक्षकों की ओर से उनका नाम दिया गया था. उनके पद स्वीकार न करने के अलग अलग कारण बताए जा रहे हैं. एक कारण कार्यकर्ता की नाराज़गी का भी सामने आया. कहा गया कि अध्यक्ष खखंडेलवाल ने राहुल गौतम से पद छोड़ने के लिए कहा. राहुल पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम के पुत्र हैं. राहुल की नियुक्ति से परिवार वाद के आरोप लगना स्वाभाविक था.